B.A. 1st SEMESTER PHILOSOPHY MJC/MIC

Dr. RAKESH KR. SINGH
G.D.C. BAGAHA

तर्कशास्त्र की शाखाएँ
Branches of Logic

तर्कशास्त्र दो शब्द तर्क और शास्त्र से बना है। तर्क का अर्थ अनुमान तथा शास्त्र का अर्थ विषय होता है। अतः तर्कशास्त्र में अनुमान का अध्ययन किया जाता है। अनुमान को ज्ञान प्राप्त करने के एक साधन के रूप में स्वीकार किया गया है परन्तु इसमें गलती की संभावना बनी रहती है। हमारा अनुमान गलत हो सकता है। इसलिए तर्कशास्त्र सही-सही अनुमान करने का नियम बतलाता है। कोई भी अनुमान तभी सत्य होता है जब उसके आकार (Form) तथा विषय (Matter) दोनों ही सत्य हो। अतः तर्कशास्त्र का उद्देश्य होता है सत्यता की प्राप्ति। सत्य दो प्रकार के होते हैं ① आकारिक और ② वास्तविक।

आकारिक सत्यता का संबंध केवल अनुमान के आकार से होता है- जैसे - सभी बिल्लीयाँ कुत्ते हैं।
सभी कुत्ते बिल्लीयाँ हैं।
∴ सभी कुत्ते कुत्ते हैं।

यह अनुमान आकारिक दृष्टिकोण से सत्य है क्योंकि यह नियम के अनुकूल है। तर्कशास्त्र को एक पूर्ण विद्या होने के लिए आकारिक तथा वास्तविक दोनों प्रकार की सत्यता का होना आवश्यक है। आकारिक तथा वास्तविक सत्य परस्पर विरोधी नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं जैसे - सभी मनुष्य मरणशील हैं।
तुम एक मनुष्य हो।
∴ तुम मरणशील हो।

इस अनुमान में आकारिक तथा वास्तविक दोनों प्रकार की सत्यता निहित है। आगमन में निष्कर्ष की वास्तविक सत्यता निरीक्षित उदाहरणों पर आधारित होती है जबकि निगमन में निष्कर्ष की सत्यता आधार वाक्यों की सत्यता पर निर्भर होती है। वस्तुतः अनुमान ऐसा होना चाहिए जिसके निष्कर्ष में वास्तविक सत्यता हो। यह तभी संभव होगा जब अनुमान के क्रम में लाए गये आधार वाक्य भी सत्य हो

चूंकि तर्कशास्त्र का संबन्ध अनुमान से है और अनुमान के दो भेद या शाखाएँ बतलाये गये हैं- ① आगमनात्मक अनुमान या तर्कशास्त्र और ② निगमनात्मक अनुमान या तर्कशास्त्र अतः निगमनतर्कशास्त्र के अध्ययन के पूर्व हमे यह जानना आवश्यक

Branches of Logic

है कि अनुमान या तर्कशास्त्र की इन दोनों विधियों के बीच अर्थात निगमन तथा आगमन में किस प्रकार का संबन्ध है या अन्तर है।

(1) निगम तर्कशास्त्र में हम 'सब' से 'कुछ' की ओर जाते हैं अर्थात सामान्य तर्कवाक्य के आधार पर ~~विशेष~~ विशेष तर्कवाक्य की स्थापना करते हैं जैसे - सभी मनुष्य बुद्धिमान हैं।
सोहन मनुष्य है।
∴ सोहन बुद्धिमान है।

जबकि आगमन तर्कशास्त्र में हम 'कुछ' से 'सब' की ओर प्रस्थान करते हैं अर्थात विशेष तर्कवाक्यों से सामान्य तर्कवाक्यों की स्थापना करते हैं जैसे - राम मरता है।
श्याम मरता है।
सोहन मरता है।
∴ सभी मनुष्य हैं।
∴ सभी मनुष्य मरणशील हैं।

(2) निगमन तर्कशास्त्र में आधार वाक्य को सदैव सत्य मान लिया जाता है और तब इसके आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं। जैसे
सभी मनुष्य मरणशील हैं।
∴ राम मरणशील है।

जबकि आगमन तर्कशास्त्र में आधार वाक्य निरीक्षण पर आधारित होते हैं जैसे - कुछ मनुष्य मरणशील है।
∴ सभी मनुष्य मरणशील हैं।

इस अनुमान में कुछ मनुष्यों को मरते हुए देखकर उसके आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है।

(3) निगमन तर्कशास्त्र का संबन्ध केवल आकारिक सत्यता से होता है तथा वास्तविक सत्यता से इसमें पूर्णतया अभाव पाया जाता है। जैसे
सभी मनुष्य बिल्लीयाँ हैं।
सभी मनुष्य कुत्ते हैं।
सभी कुत्ते बिल्लीयाँ हैं।

आकारिक सत्यता के अनुसार यह अनुमान सत्य है, लेकिन वास्तविक सत्यता के अनुसार यह अवैध है।